



श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटड़ा



SHRI MATA VAISHNO DEVI UNIVERSITY

Katra, Jammu & Kashmir (INDIA) – 182320

अखिल भारतीय दर्शन-परिषद्

60वां अधिवेशन (03-05 जून 2015)

अखिल भारतीय दर्शन परिषद् की स्थापना सन् 1954 ई० में राष्ट्रभाषा हिन्दी माध्यम से दार्शनिक विमर्श को स्थापित एवं प्रसारित करने हेतु किया गया। बाबू सम्पूर्णानन्द, आचार्य नरेन्द्रदेव, प्रभाकर माचवे जैसे मनीषियों के मार्गनिर्देशन में जयपुर के श्री यशदेव शल्य और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के तत्कालीन प्रो० संगमलाल पाण्डेय ने इस परिषद् की स्थापना की। अपनी स्थापना के साथ ही परिषद् द्वारा मुखपत्र के रूप में 'दार्शनिक त्रैमासिक' का प्रकाशन आरंभ किया गया जो अद्यतन प्रकाशित हो रहा है। संप्रति लगभग 2000 आजीवन सदस्यों के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से दर्शन में मौलिक चिंतन को बढ़ावा देने वाली यह शीर्ष संस्था है। परिषद् के अधिवेशन की यात्रा प्रयाग की पावन-भूमि से 1956 में शुरू हुई और तब से लेकर आज तक इसके वार्षिक अधिवेशन देश के कोने-कोने में आयोजित होते रहे हैं।

यह गौरव की बात है कि परिषद् का महत्त्वपूर्ण 60वां अधिवेशन 3 से 5 जून 2015 के मध्य आयोजित करने का दायित्व श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटड़ा, जम्मू-कश्मीर, को मिला है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के पूर्ण वित्तीय सहयोग से सन् 1999 में हुई। यह विश्वविद्यालय हिमालय की गोद में स्थित त्रिकुटा पर्वतमालाओं के सुरम्य वातावरण में स्थापित किया गया है। सन् 2004 से यहाँ पर विज्ञान, तकनीकी, और मानविकी विषयों में स्नातक और परास्नातक स्तर पर अध्ययन-अध्यापन किया जा रहा है।

अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के 60वें अधिवेशन के प्रधान सभापति का गौरव डॉ० ज्योतीन्द्र भाई दवे को प्रदान किया गया है जो स्वामीनारायण शोध संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक पद पर सुशोभित हैं। डॉ० दवे की अभिरुचि दर्शन और संस्कृति जैसे गंभीर विषय में अनुसंधान की रही है, यह एक सुखद संयोग है कि इस अधिवेशन का मुख्य विषय "दर्शन एवं संस्कृति" रखा गया है। प्रतिवर्ष की भाँति इस बार भी अधिवेशन के शैक्षणिक कार्यक्रमों में व्याख्यानमालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त अधिवेशन की वरीयता को देखते

हुए “Epistemology and Indian Logic” विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया जा रहा है। अन्य दो संगोष्ठियों के विषय निम्नलिखित हैं:

1. कश्मीर शैव-दर्शन एवं सौंदर्यशास्त्र की भारतीय परम्परा
2. अंतर-साभ्यतिक संघर्ष और संवाद की संभावना

व्याख्यानमालाएँ

1. डॉ॰ रमाशंकर श्रीवास्तव तुलनात्मक धर्म-विज्ञान व्याख्यान - प्रो॰ पी॰ सिसाद्री, मुम्बई
2. परमहंस योगानन्द तुलनात्मक धर्म-दर्शन व्याख्यान - डॉ॰ पूर्णेन्दु शेखर, भागलपुर
3. तुलनात्मक धर्म अकादमी व्याख्यान - प्रो॰ आई॰ एन॰ सिन्हा, पटना
4. वल्लभ वेदान्त व्याख्यान - प्रो॰ प्रदीप खरे, भोपाल
5. स्व॰ चंपादेवी एवं मुल्तानमल्लजी तातेड़ स्मृति व्याख्यान - प्रो॰ रज्जन कुमार, बरेली
6. प्रो॰ संगमलाल पाण्डेय स्मृति व्याख्यान - प्रो॰ ऋषिकान्त पाण्डेय, इलाहाबाद
7. स्वामी प्रणवानन्द तुलनात्मक दर्शन व्याख्यान - प्रो॰ अभिमन्यु सिंह, वाराणसी
8. महर्षि दयानन्द व्याख्यान - डॉ॰ मिथिलेश कुमार, पटना
9. स्वामीनारायण सेश्वर वेदान्त व्याख्यान - प्रो॰ महेश सिंह, आरा
10. प्रो॰ ब्रह्मेश्वर पाण्डेय विद्यार्थी स्मृति विशिष्टाद्वैत व्याख्यान - प्रो॰ सभाजीत मिश्र, गोरखपुर
11. डॉ॰ शशिलेखा मिश्रा व्याख्यान - डॉ॰ दिलीप चारण, अहमदाबाद
12. हिमगिरी आध्यात्मिक शोध संस्थान व्याख्यान - प्रो॰ राजकुमारी सिन्हा, राँची

अधिवेशन का मुख्य विषय: “दर्शन एवं संस्कृति”

अवधारणा: मानवीय चिंतन की तार्किक अभिव्यक्ति का नाम ही दर्शन है। चिंतन का उत्स मानवीय अनुभव या बुद्धि जो भी माना जाय, इसका मौलिक स्वरूप तथ्यों एवं विचारों में सम्बन्धों का निदर्शन एवं उनका विश्लेषण ही होता है। मनुष्य अपनी बौद्धिक शक्तियों के क्रियात्मक उपयोग द्वारा नूतन विचारों की उदभावना और निष्कर्षों की प्रस्थापना करता है। इस क्रियात्मकता का प्रस्थान बिन्दु यदि मानवीय अनुभव को माना जाय तो अनुचित नहीं होगा। यदि वैचारिक प्रक्रिया को सम्बन्धों के निदर्शन और विश्लेषण के रूप में देखा जाय तो इसका उद्गम आनुभविक स्तर पर प्राप्त सादृश्यता में देखा जा सकता है। सादृश्यता की अनुभूति बहुआयामी है। इसका विस्तार मनुष्य और जागतिक वस्तुओं के सम्बन्धों से लेकर सामाजिक ताने-बाने को बहुआयामी स्वरूप देने वाले विविध सम्बन्धों तक होता है। इन सम्बन्धों के एक परिष्कृत स्वरूप का नाम ही संस्कृति है। सम्बन्धों का कौन-सा स्वरूप परिष्कृत है इसकी अवधारणा में विषयनिष्ठता कुछ सीमा तक अपरिहार्य है। क्योंकि लोगों की अभिरुचि और मौलिक विश्वासों का निर्धारण बहुत सीमा तक उनकी भौगोलिक परिस्थिति एवं संसाधनों की उपलब्धता से होता है और इनकी विविधता संसार में अनुभवसिद्ध है। यही कारण रहा है कि संसार के भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का आविर्भाव हुआ।

संस्कृति के अंतर्गत हम किसी सभ्यता अथवा देश के लोगों के रहन-सहन, सामाजिक परम्पराओं, विश्वासों, राजनीतिक व्यवस्था, भाषा, धर्म और दर्शन का विचार करते हैं। इस प्रकार संस्कृति विभिन्न बिन्दुओं का एक समुच्चय है और दर्शन भी संस्कृति का ही एक अंग है। संस्कृति को जिस तरह किसी सभ्यता की आत्मा कहा जाता है, उसी तरह दर्शन को किसी संस्कृति की आत्मा कहा जा सकता है। प्रत्येक संस्कृति अपने साररूप में दार्शनिक चिंतन की उदभावना करती है। एक संस्कृति द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक चिंतन में उस संस्कृति के विशिष्ट विश्वासों की छाप होती है। अर्थात्, प्रत्येक संस्कृति जिन दार्शनिक प्रश्नों पर विचार करती है वे उस संस्कृति के ही विशेष अनुभवों पर आधारित होते हैं। प्रत्येक संस्कृति अपनी मान्यताओं के अनुरूप अथवा उनके समर्थन में दार्शनिक मत को प्रतिपादित करती है। इस प्रकार वह एक विशेष तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, धर्म-दर्शन, समाज-दर्शन अथवा नीति-दर्शन का प्रणयन और चयन करती है जो उसकी मान्यताओं से सुसंगत हों।

निश्चय ही दर्शन से पूर्व कुछ मान्यताओं, भाषा, धर्म आदि का उदय एक संस्कृति में हो जाता है। इस प्रकार दर्शन का अस्तित्व किसी संस्कृति के पूर्व अथवा उससे भिन्न नहीं हो सकता। इस दृष्टि से भी विभिन्न संस्कृतियों द्वारा अभिव्यक्त दर्शन एक-दूसरे से भिन्न ही होंगे। परन्तु इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि जहां-जहां सांस्कृतिक समानताएँ होंगी, अर्थात् जहां-जहां भाषागत, धार्मिक एवं परंपरागत समानताएँ होंगी, वहाँ दार्शनिक विचारों में भी समानता प्राप्त होगी। वास्तव में, वैचारिक समरसता का मौलिक आधार मानवीय बुद्धि में सादृश्यता के अवग्रहण की नैसर्गिक क्षमता ही होता है।

उपर्युक्त पर्यवेक्षण के आधार पर दर्शन एवं संस्कृति के बीच दो तरह के संबंध की बात की जा सकती है: पहली यह कि दर्शन संस्कृति से मूल रूप से प्रभावित होता है, अतः विभिन्न दार्शनिक परम्पराओं में कोई समानता नहीं हो सकती। इसके विपरीत दूसरी बात यह कि कोई भी दार्शनिक परंपरा अपनी सांस्कृतिक विरासत से मौलिक रूप से सम्बद्ध होते हुये भी कुछ सार्वभौम मूल्यों को समाहित करती है। इसका प्रत्यक्ष संबंध मनुष्य की सहज जिज्ञासु प्रवृत्ति से है। मानवीय जिज्ञासा इच्छा-स्वातंत्र्य से सम्बद्ध होकर सार्वभौम मूल्यों का सृजन करती है। उदाहरण के लिए, विचार और व्यवहार को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए सभी संस्कृतियों में सार्वभौम तार्किक और नैतिक मूल्यों का अवधारण किया गया है। इन अवधारणाओं का संस्कृति-विशेष में प्रतिपादित तत्त्वमीमांसीय और ज्ञानमीमांसीय चिंतन से निकट संबंध देखा जाता है।

मनुष्य जब जगत के विषय में प्राप्त अनुभवों के आधार पर जगत की उत्पत्ति एवं इसके स्वभाव के विषय में बौद्धिक विश्लेषण करता है तो तत्त्वमीमांसा की उत्पत्ति होती है। वहीं जब उसका उद्देश्य बुद्धि और अनुभव की सीमा तथा उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान एवं संभावित ज्ञेय के स्वरूप का निर्णय करना होता है तो ज्ञानमीमांसीय चिंतन की धारा अनुस्यूत होती है। मनुष्य एवं समाज के मध्य सम्बन्धों के विषय में विचार करने पर धर्म, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों से संबन्धित प्रश्नों का प्रत्यक्ष होता है। इन विषयों पर जब भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन में उपलब्ध विचारों की तुलना होती है तो इनकी भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि स्वतः प्रासंगिक हो जाती है। बौद्ध दर्शन का इतिहास दर्शन और संस्कृति के बीच संबंध का एक अनुपम उदाहरण है। बौद्ध धर्म जिन-जिन देशभूमियों में प्रसरित हुआ उन-उन देशों की संस्कृति के अनुसार इसके बाह्य स्वरूप और साधना पद्धति में भी परिवर्तन हुआ। इसके साथ-साथ ही दार्शनिक विचारों में भी समृद्धि एवं बहुलता आती गयी। परन्तु जगत की अनित्यता की अवधारणा अनुभवसिद्ध होने के

कारण सार्वभौम रूप से स्वीकृत हुई और इसीलिए सांस्कृतिक समाहार (cultural assimilation) के बावजूद भी इसका मौलिक स्वरूप अक्षुण्य रहा। पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन का आधुनिक स्वरूप भी धर्म एवं विज्ञान के अलावा अनेक संस्कृतियों के मध्य संघर्ष और संवाद का परिणाम है। आधुनिक राष्ट्र और समाज का वर्तमान स्वरूप भी इन्हीं संघर्षों और संवादों से होकर विकसित हुआ है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि सम्पर्क और सूचना क्रांति के इस युग में मनुष्य का भविष्य विभिन्न दर्शनों एवं संस्कृतियों के मध्य स्वस्थ संवाद से ही सुरक्षित रह सकता है। अधिवेशन के सुधी प्रतिभागियों से अपेक्षा है कि उपर्युक्त चिंतन के परिप्रेक्ष्य में वे निम्नलिखित विभागों पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करेंगे:

- | | |
|-------------------------|---|
| 1. तर्क और ज्ञानमीमांसा | विभागाध्यक्ष: प्रो० अमरनाथ झा, दरभंगा |
| 2. तत्त्वमीमांसा | विभागाध्यक्ष: प्रो० भगवन्त सिंह, रायपुर |
| 3. नीति दर्शन | विभागाध्यक्ष: प्रो० भरत तिवारी, जबलपुर |
| 4. धर्म मीमांसा | विभागाध्यक्ष: प्रो० डी० एन० यादव, गोरखपुर |
| 5. समाज दर्शन | विभागाध्यक्ष: प्रो० श्रीप्रकाश पाण्डेय, वाराणसी |

प्रथम संगोष्ठी का विषय: कश्मीर शैव-दर्शन एवं सौंदर्यशास्त्र की भारतीय परम्परा

अध्यक्ष: प्रो० नवजीवन रस्तोगी, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संभावित वक्तागण:

- | | |
|---------------------------------|-------------------------------|
| डॉ० रजनीश कुमार शुक्ल, वाराणसी | डॉ० मुकेश कुमार चौरसिया, पटना |
| डॉ० शिवानी शर्मा, चंडीगढ़ | डॉ० अनीता महतो, पूर्णिया |
| डॉ० रामबहादुर शुक्ल, जम्मू | डॉ० राकेश कुमार पाण्डेय, रीवा |
| डॉ० विष्णुदत्त पाण्डेय, वाराणसी | डॉ० शिव परसन सिंह, आरा |
| डॉ० किस्मत कुमार सिंह, आरा | डॉ० विनोद कुमार सिंह, कैमूर |
| डॉ० राजेश कुमार झा, वाराणसी | डॉ० विजय कुमार सिन्हा, हिसुआ |
| डॉ० राजेश चौरसिया, वाराणसी | डॉ० शंभू पासवान, भागलपुर |

द्वितीय संगोष्ठी का विषय: अंतर-साभ्यतिक संघर्ष और संवाद की संभावना

अध्यक्ष: प्रो० रामजी सिंह, राजस्थान

संभावित वक्तागण:

डॉ० देवव्रत चौबे, वाराणसी

डॉ० आलोक टण्डन, हरदोई

डॉ० सुधा चौधरी, उदयपुर

डॉ० सरोज कुमार वर्मा, मुजफ्फरपुर

डॉ० अवतारलाल मीणा, राजस्थान

डॉ० दिनेश कुमार, पटना

डॉ० दिनेश चंद्र श्रीवास्तव, कानपुर

डॉ० जयंत उपाध्याय, वाराणसी

डॉ० प्रमोद बागड़े, वाराणसी

डॉ० भूपेन्द्र गजेरा, गुजरात

डॉ० वीणा रानी, कटिहार

डॉ० देवदास साकेत, रीवा

डॉ० अरविंद बिक्रम सिंह, जयपुर

डॉ० श्रीकान्त मिश्र, रीवा

डॉ० नमिता निम्बालकर, मुम्बई

डॉ० प्रशान्त शुक्ल, लखनऊ

अनुरोध है कि उच्च गुणवत्ता के शोध-पत्र प्रेषित कर कोई भी अनुसंधाता उपर्युक्त संगोष्ठियों में भाग ले सकता है। इनके वक्ताओं की अन्तिम सूची शोध-पत्रों की प्रति निर्धारित समय के भीतर प्राप्त होने के बाद प्रकाशित की जाएगी।

Instructions and Process of Registration

Registration Fee (per person):

Faculty and other delegates (India): 2500/- (two thousand and five hundred Indian rupees)

Student delegates (India): 1500/- (one thousand and five hundred Indian rupees)

Local delegates (with only luncheons): 1000/- (one thousand Indian rupees)

Accompanying persons (beyond 12 yrs. age): 2000/- (two thousand Indian rupees)

Overseas (non-SAARC) delegates: \$100 (one hundred US Dollar)

[The registration fee for the **SAARC delegates** is the same as for **Indian delegates**. It includes conference kit, hospitality and local transport. The fee for accompanying person however does not include conference kit.]

Mode of Payment:

There are two ways to submit registration fee:

1. Through a Demand Draft in favour of "Registrar, SMVDU" payable at Jammu, Or
2. Through NEFT transaction in the following account:

Name of the Account: Registrar, SMVDU

Address: SMVDU, Katra, J&K (INDIA) -182320

Account No.: 0477040100000023

Name of the Bank: J&K Bank

Branch: Shri Mata Vaishno Devi University

IFSC: JAKA0SMVDUN

SWIFT Code: JAKAINBBSRJ

The Registration Form along with original DD/copy of NEFT transaction should be sent to the address for communication given below.

IMPORTANT DATES

Last Date for Abstract and Registration Fee Submission: 23rd Mar. 2015

Announcement Date for the Acceptance of Abstract: 30th Mar. 2015

Last Date for Full Paper Submission: 30th April 2015

After 30th April 2015, one can register with a Late Fee of Rs. 500/- along with full paper till 5th May 2015. **Please note that it would not be possible for us to entertain any further request after 5th May 2015.**

GUIDELINES FOR ABSTRACT AND PAPER SUBMISSION

(please submit only electronic copy preferably in .doc/.docx mode)

Abstract length: 300 - 500 words

Full Paper length: 3000 - 5000 words

Font for Hindi articles: Kruti Dev 010

Font for English articles: Times New Roman

Font Size:

Title: 14 Bold

Section: 12 Bold

Subsection: 12 Italics

Text: 12 Normal

Spacing: 1.5

Referencing: APA Style

Address for Communication:

Dr. Anil Kumar Tewari

Organizing Secretary

Conference Secretariat, School of Philosophy & Culture

Shri Mata Vaishno Devi University, Katra, J&K (INDIA) - 182320

Phone: +91 1991 285693

Fax: +91 1991 285693

Email: darshan.parishad@smvdu.ac.in



श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय



अखिल भारतीय दर्शन-परिषद्

60वां अधिवेशन (03-05 जून 2015)

पंजीयन-प्रपत्र

नाम: श्री/सुश्री/डॉ० _____

Name: Mr./Ms./Dr. _____

पदनाम: _____ जन्म-तिथि: _____

विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम: _____

पत्र-व्यवहार का पता: _____

_____ पिन _____

दूरभाष: _____ ई-मेल: _____

आलेख का शीर्षक: _____

पंजीयन-शुल्क का विवरण:

परिषद् सदस्य-क्रमांक _____ राशि रु0 _____ (शब्दों में _____)

NEFT संदर्भ-संख्या _____ दिनांक _____ अथवा

ड्राफ्ट-क्रमांक _____ दिनांक _____ बैंक का नाम _____

गैर-प्रतिभागी साथी का विवरण:

नाम	प्रतिभागी से संबंध	उम्र	पुरुष/स्त्री
-----	--------------------	------	--------------

आवास व्यवस्था: चाहिए / नहीं चाहिए

आगमन का स्थान: जम्मू रेलवे-स्टेशन / कटड़ा रेलवे-स्टेशन / जम्मू एयरपोर्ट

तिथि _____ समय _____

प्रस्थान का विवरण:

तिथि _____ समय _____

हस्ताक्षर
(प्रतिभागी)

(हस्ताक्षर एवं मुहर)

डीन/विभागाध्यक्ष द्वारा अग्रसारित (विद्यार्थियों के लिए केवल)

Theme for International Section: “Epistemology and Indian Logic”

CONCEPT NOTE: The rationality of the theme “epistemology and Indian logic” lies in the fact that logic in India has been part and parcel of different *systems* of philosophy and therefore has been inseparably linked to their epistemological and metaphysical beliefs. As there is no single system called ‘Indian philosophy’, Indian logic is also studied in a systemic form such as the Nyāya logic, the Buddhist logic and the Jaina logic. Despite a wide range of differences in the metaphysical beliefs of different systems, there are some recognizable similarities in epistemological thinking. For example, there are focused debates on the nature and function of knowledge, number of the sources of knowledge, the conditions leading to illusory cognition and the role of reasoning and testimony in dispelling the ignorance—a sine qua non to the attainment of the ultimate objective. These debates drew the attention of thinkers to the patterns of reasoning as early as in the second century B.C.E. The modern sense of logic is therefore traced back into the intellectual activity called *anvīkṣā* (investigation) which consists in the reviewing (*anu-īkṣaṇa*) of a thing previously apprehended (*īkṣita*) through perception or verbal cognition. The science that makes this activity as the subject matter of its study is variously named *ānvīkṣikī*, *nyāyavidyā*, or *hetuvidyā*, the ‘science of reasoning’ (logic). *Anumāna* (‘*anu*’ means ‘after’ and ‘*māna*’ means ‘knowledge’) thus becomes a natural term to refer to the process of reasoning.

What is significant in the above definition of logic is the nuptial link of inferential knowledge to a previously acquired knowledge, perceptually or otherwise. Logic, in the classical Indian philosophy, is therefore discussed as a part of epistemology, not as an independent discipline. And, the manifest goal of inference is to generate true cognition or knowledge whether for oneself or for others, and not to prove validity or invalidity. What is crucial to the production of inferential knowledge is the necessary relationship between the reason (*hetu*) and the claim (*sādhya*). A careful and elaborate discussion on ascertaining and apprehending this relationship is seen in the Indian logical tradition. It is also observed that a great amount of energy is invested by the Indian logicians in establishing the universal proposition (*udāharaṇa*—the statement of necessary relation between the *hetu* and the *sādhya* along with actual instance) than developing formal techniques of reasoning. This is not to suggest that the discussions do not involve any structure. The logical section of the *Carakasamhitā* (c. first century C.E. text on health care) delineates the methods of discussion. It is not surprising to see the elaboration of the technique in this text given the urgent nature of the medical profession. On the basis of the symptoms (*hetu*) the medical professionals ascertain the presence of a particular disease (*sādhya*) in a body. The certainty of their inferential knowledge enables them to prescribe suitable treatment.

The pragmaticity of the above kind however has not hindered the Indian logicians to delve deeply on various issues pertaining to generation and authenticity of inferential knowledge. After particularly 4th or 5th century C.E., a plethora of texts can be seen undertaking logical issues for separate discussions. There has not been a concerted effort to explore the insights available in the

Indian logical thinking. The discussion is required from not only historical perspective but also in relation to the concepts developed in rational sequence. For example, whereas the ancient thinkers relied on the analogical method of reasoning, the later thinkers engaged in *hetu*-centric discussion, the Navya-nyāya method being the latest one. Similarly, whereas the non-Buddhist thinkers adopted primarily the technique of demonstration, the Buddhist thinkers opted primarily for the technique of refutation. What could have been the reason for such development? An answer to this question may reaffirm the close ties between the logical thinking and epistemological and metaphysical beliefs. The participants of the seminar are expected to stimulate the discussion of theoretical and/or practical relevance. The following are the suggestive themes:

- The Concept of Pramāṇa
- Analogical Reasoning in Ancient Debates
- The Question of Truth, Validity and Soundness with regard to *Anumāna*
- The Nature of Necessity between *Hetu* and *Sādhya*
- *Anupalabdhi* and *Abhāva*
- Reducibility of the Sources of Knowledge
- The Navya-nyāya Concept of Negation
- The Issue of Psychologism in Indian Logic
- The Jaina Synthesis of the Logical Structure
- The Nature of Universal Proposition
- The Concept of *Prasaṅga*

The authors are expected to choose any topic from the wide range of Indian logical thinking.

Prospective Speakers:

Prof. Pradeep Gokhale (Chairperson)
Prof. V. N. Jha
Prof. G. Mishra
Prof. A. D. Sharma
Prof. Rakesh Chandra
Prof. Sachchidanand Mishra
Prof. Raghunath Ghosh
Prof. Ashok Vohra
Prof. Shivani Sharma
Dr. Varun Kumar Tripathi
Dr. Anil Kumar Tewari
Dr. Madhu Mangal Chaturvedi

Overseas participants are also expected in this section. Any research scholar can participate in this section by sending a good quality research paper within the stipulated time. The final list of speakers will be published after receiving research papers and confirmed participation.



Shri Mata Vaishno Devi University

Katra, Jammu & Kashmir (INDIA)

60th Session of All India Philosophy Association

(3 – 5 June 2015)

Registration Form



Name: Mr./Ms./Dr. _____

Designation: _____ Date of Birth _____

University/College/Institute: _____

Address for Correspondence: _____

_____ PIN _____

Phone: _____ E-mail: _____

Title of Presentation: _____

Details of Registration Fee:

Membership No.: _____ Amount: _____ (In Words _____)

NEFT Ref. No.: _____ Date _____ Or DD No.: _____

Date _____ Issuing Bank _____

Details of Accompanying Person(s):

Name	Relationship	Age	Male/Female
------	--------------	-----	-------------

Accommodation: Required / Not required

Arrival At: Jammu Railway Station / Katra Railway Station / Jammu Airport

Date: _____ Time: _____

Departure From: Jammu Railway Station / Katra Railway Station / Jammu Airport

Date: _____ Time: _____

Signature
(Participant)

Forwarded by Dean/Head of Department
Signature with Seal
(necessary for students only)

NEARBY PLACES TO VISIT

माँ वैष्णो देवी

माँ वैष्णो देवी की पवित्र गुफा जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में त्रिकुटा पर्वत में समुद्रतल से लगभग 5200 फुट की ऊंचाई पर अवस्थित है। भवन के लिए रास्ता कटड़ा से होकर जाता है जो कि श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय (SMVDU) से करीब 12 किमी० दूर पड़ता है। प्रत्येक वर्ष करोड़ों भक्त माँ के दर्शन करने आते हैं। तीर्थयात्रियों की सुख-सुविधा एवं दर्शन की



सुचारु व्यवस्था करने की लिए जम्मू-कश्मीर सरकार ने सन् 1980 ई० में श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड का गठन किया है। लगभग 14 किमी० पर्वतारोहण के पश्चात् भक्त माँ वैष्णवी के दर्शन का पुण्य अर्जित करते हैं। भक्त माँ का दर्शन भावरूप में तीन पिंडियों में करते हैं। इस पवित्र स्थान का प्रथम उल्लेख महाभारत ग्रंथ में माना जाता है।

शिवखोड़ी

शिवखोड़ी की गुफा रियासी जिले के रणसू तहसील में स्थित है जो कटड़ा से लगभग 70 किमी० पड़ती है। रणसू से 3.5 किमी० की मनमोहक पदयात्रा करके भक्त गुफा के अंदर बाबा भोलेनाथ का दर्शन-लाभ पाते हैं। यहाँ स्थापित प्राकृतिक शिवलिंग भारत के प्राचीनतम शिवलिंगों में शामिल किया जाता है। रणसू से गुफा तक की पदयात्रा बड़ी ही मनोरम है। यहाँ की यात्रा की सुविधा के लिए भी जम्मू-कश्मीर सरकार ने शिवखोड़ी श्राइन बोर्ड का गठन किया है।



बाबा अघार जित्तो

कटड़ा से करीब 5 किमी० रियासी राजमार्ग पर अवस्थित बाबा अघार जित्तो एक आध्यात्मिक स्थान है। इस स्थान की कहानी एक माँ वैष्णवी के भक्त, जो बाबा जित्तो के नाम से जाने जाते हैं, से जुड़ी है। बाबा जित्तो एक किसान थे जिनका हक गाँव के जमींदार बीर सिंह ने छीन लिया था। उन्होंने अपने एवं किसानों के हक की लड़ाई में अपने जीवन को समर्पित कर दिया था। ऐसा माना जाता है कि वे प्रतिदिन माँ के दर्शन करने जाया करते थे। जब वे अक्षम हो गए तो माँ वैष्णवी उन्हें स्वयं दर्शन देने आई थी। यह भी विश्वास किया जाता है कि जिन सात नदों में यहाँ जल आता है उसका स्रोत भवन में माँ के चरणों में प्रवाहित पवित्र जल ही है।



पटनीटॉप

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय से करीब 70 किमी० की दूरी पर श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित पटनीटॉप एक मनोरम पर्यटन स्थल है। यह ऊधमपुर जिले में पड़ता है। यहाँ पर सर्दियों में भयंकर बर्फबारी होती है तथा जम्मू से आने वाले सैलानियों के लिए निकटतम हिल-स्टेशन है। गर्मियों में भी यहाँ का तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से नीचे ही रहता है। इस स्थान से 5 किमी० आगे एक अन्य हिल-स्टेशन नत्था टॉप भी है।



मानसर झील

विश्वविद्यालय से करीब 50 किमी० दूर जम्मू जिले में स्थित मानसर झील का संबंध पौराणिक मानसरोवर झील से माना जाता है। यहाँ पर शेषनाग की एक पवित्र स्थली है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि झील की परिक्रमा करने से शेषनाग की कृपा प्राप्त होती है। झील के पास ही एक प्रसिद्ध उमापति महादेव और नरसिंह भगवान तथा माँ दुर्गा का मंदिर है।

